Std-9 हिन्दी –व्याकरण (pt-1)

- अनुस्वार
- अनुनासिक
- उपसर्ग
- प्रत्यय
- पर्यायवाची
- विलोम

अनुस्वार और अनुनासिक

- 1 अनुस्वार की परिभाषा
- अनुस्वार का शाब्दिक अर्थ है - अनु + स्वर अर्थात स्वर के बाद आने वाला।
- दूसरे शब्दों में - अनुस्वार स्वर के बाद आने वाला व्यञ्जन है। इसकी ध्वनि नाक से निकलती है। हिंदी भाषा की लिपि में अनुस्वार का चिह्न बिंदु (.) के रूप में विभिन्न जगहों पर प्रयोग किया जाता है।
- **अनुस्वार का प्रयोग**
- अनुस्वार (ं) का प्रयोग पंचम वर्णों (**ङ, ञ, ण, न, म** ये **पंचाक्षर** कहलाए जाते हैं) के स्थान पर किया जाता है।
- **जैसे -**

गङ्गा = गंगा
चञ्चल = चंचल
डण्डा = डंडा
गन्दा = गंदा
कम्पन = कंपन

अनुनासिक की परिभाषा

- जिन स्वरों के उच्चारण में मुख के साथ-साथ नासिका की भी सहायता लेनी पड़ती है। अर्थात् जिन स्वरों का उच्चारण मुख और नासिका दोनों से किया जाता है वे अनुनासिक कहलाते हैं।
- इनका चिह्न चन्द्रबिन्दु (ँ) है।

2अनुनासिक

| अनुनासिक का प्रयोग

- जिस प्रकार अनुनासिक की परिभाषा में बताया गया है कि जिन स्वरों का उच्चारण मुख और नासिका दोनों से किया जाता है, वे अनुनासिक कहलाते हैं और इन्हीं स्वरों को लिखते समय इनके ऊपर अनुनासिक के चिह्न चन्द्रबिन्दु (ँ) का प्रयोग किया जाता है।
  यह ध्वनि (अनुनासिक) वास्तव में स्वरों का गुण होती है। अ, आ, उ, ऊ, तथा ऋ स्वर वाले शब्दों में अनुनासिक लगता है।
- जैसे -

कुआँ, चाँद, अँधेरा ,आँख ,गाँव,माँ, अँगना, ऊँची; उछलूँ, पाँच, काँटा, चाँदनी, उँगलियाँ, बूँद, आँधी, साँझी,आदि

उपसर्ग और प्रत्यय

उपसर्ग की परिभाषा, उपसर्ग के भेद और उदाहरण

- **Prefixes in Hindi - Upsarg (उपसर्ग)**: इस लेख में हम कुछ उपसर्गों के बारे में जानेंगे। उपसर्ग क्या होते हैं? उपसर्गों की क्या विशेषताएँ हैं? संस्कृत, हिंदी, अंग्रेज़ी और उर्दू भाषाओं के मुख्य उपसर्ग कौन-कौन से हैं? उपसर्ग क्यों आवश्यक हैं? इन सभी प्रश्नों के बारे में इस लेख में वर्णन किया गया है। सबसे पहले उपसर्ग क्या होते हैं इस प्रश्न

- **उपसर्गों की क्या विशेषताएँ हैं इसके बारे में जानेंगे -**
  उपसर्ग की तीन विशेषताएँ कही जाती हैं -
  (1) शब्द के अर्थ में नई विशेषता लाना।
  जैसे- प्र + बल= प्रबल
  अनु + शासन= अनुशासन

- (2) शब्द के अर्थ को उलट देना।
  जैसे- अ + सत्य= असत्य
  अप + यश= अपयश

- (3) शब्द के अर्थ में कोई खास परिवर्तन न करके मूलार्थ के इर्द-गिर्द अर्थ प्रदान करना।
  जैसे- वि + शुद्ध= विशुद्ध
  परि + भ्रमण= परिभ्रमण
  उपसर्ग हमेशा मूल शब्द के आगे लगते हैं और एक से दो अक्षर के होते हैं। उपसर्ग और मूल शब्द की संधि के बाद जो नया शब्द बनता है, वह मूल शब्द के अर्थ में या तो कुछ-न-कुछ विशिष्ट जोड़ देता है या अर्थ को ही बदल देता है।

- **संस्कृत के उपसर्ग-**
- 1अति -अधिक, ऊपर, उस पार
- अतिकाल, अत्याचार, अतिकर्मण, अतिरिक्त, अतिशय, अत्यन्त, अत्युक्ति, अतिक्रमण, इत्यादि ।
- 2अधि -ऊपर, श्रेष्ठ
- अधिकरण, अधिकार, अधिराज, अध्यात्म, अध्यक्ष, अधिपति इत्यादि।
- 3अप -बुरा, अभाव, हीनता, विरुद्ध
- अपकार, अपमान, अपशब्द, अपराध, अपहरण, अपकीर्ति, अपप्रयोग, अपव्यय, अपवाद इत्यादि।
- 4अ -अभाव
- अज्ञान, अधर्म, अस्वीकार इत्यादि।
- 5अनु -पीछे, समानता, क्रम, पश्चात
- अनुशासन, अनुज, अनुपात, अनुवाद, अनुचर, अनुकरण, अनुरूप, अनुस्वार, अनुशीलन इत्यादि।
- 6आ -ओर, सीमा, समेत, कमी, विपरीत
- आकाश, आदान, आजीवन, आगमन, आरम्भ, आचरण, आमुख, आकर्षण, आरोहण इत्यादि।
- 7अव -हीनता, अनादर, पतनअवगत, अवलोकन, अवनत, अवस्था, अवसान, अवज्ञा, अवरोहण, अवतार, अवनति, अवशेष, इत्यादि।
- 8उप -निकटता, सदृश, गौण, सहायक, हीनता
- उपकार, उपकूल, उपनिवेश, उपदेश, उपस्थिति, उपवन, उपनाम, उपासना, उपभेद इत्यादि।

- **हिंदी के उपसर्ग-**
- 1-अन -निषेध अर्थ में
- अनमोल, अलग, अनजान, अनकहा, अनदेखा इत्यादि।

- 2-अध् -आधे अर्थ में
- अधजला, अधखिला, अधपका, अधकचरा, अधकच्चा, अधमरा इत्यादि।
- 3 उन -एक कम
- उनतीस, उनचास, उनसठ, इत्यादि।
- 4 भर -पूरा ,ठीक
- भरपेट, भरपूर, भरदिन इत्यादि।
- 5-दु -बुरा, हीन, विशेष
- दुबला, दुर्जन, दुर्बल, दुकाल इत्यादि।
- 6-नि -आभाव, विशेष
- निगोड़ा, निडर, निकम्मा इत्यादि।
- 7-अ -अभाव, निषेध
- अछूता, अथाह, अटल
- 8-क -बुरा, हीन
- कपूत, कचोट
- 9-कु -बुरा
- कुचाल, कुचैला, कुचक्र
- 10 भर -पूरा
- भरपेट, भरपूर, भरसक, भरमार 11
- सु -अच्छा
- सुडौल, सुजान, सुघड़, सुफल
- 12 पर दूसरा, बाद का
- परलोक, परोपकार, परसर्ग, परहित
- 13बिन बिना, निषेध
- बिनब्याहा, बिनबादल, बिनपाए, बिनजाने

उर्दू के उपसर्ग-

- 1
- ला -बिना
- लाचार, लाजवाब, लापरवाह, लापता इत्यादि।
- 2
- बे -बिना
- बेकाम, बेअसर, बेरहम, बेईमान, बेरहम इत्यादि।
- 3
- कम -थोड़ा, हीन
- कमसिन, कामखयाल, कमज़ोर, कमदिमाग, कमजात, इत्यादि।
- 4
- ग़ैर -के बिना, निषेध
- गैरकानूनी, गैरजरूरी, ग़ैर हाज़िर, गैर सरकारी, इत्यादि।
- 5
- खुश -श्रेष्ठता के अर्थ में
- खुशनुमा, खुशगवार, खुशमिज़ाज, खुशबू, खुशदिल, खुशहाल इत्यादि।
- 6
- ना -अभाव
- नाराज, नालायक, नादनामुमकिन, नादान, नापसन्द, नादान इत्यादि।
- 7
- अल -निश्चित
- अलबत्ता, अलगरज आदि।
- 8
- बर -ऊपर, पर, बाहर
- बरखास्त, बरदाश्त, बरवक्त इत्यादि।
- 9
- बिल के साथ
- बिलआखिर, बिलकुल, बिलवजह
- 10-हम -बराबर, समान
- हमउम्र, हमदर्दी, हमपेशा इत्यादि।
- 11
- दर
- में-दरअसल, दरहक़ीक़त
- 12
- फिल/फी -में प्रति
- फिलहाल, फीआदमी
- 13
- ब -और, अनुसार
- बनाम, बदौलत, बदस्तूर, बगैर
- 14
- बा -सहित बाकाय
- दा, बाइज्जत, बाअदब, बामौक़ा
- 15
- सर -मुख्य
- सरताज, सरदार, सरपंच, सरकार
- 16
- बिला -बिना
- बिलावजह, बिलाशक
- 17
- हर -प्रत्येक
- हरदिन हरसाल हरएक हरबार

अंग्रेजी भाषा में भी कुछ उपसर्ग होते हैं जो इस प्रकार हैं

- 1
- सब
- अधीन, नीचे
- सब-जज, सब-कमेटी, सब-इंस्पेक्टर
- 2
- डिप्टी
- सहायक
- डिप्टी-कलेक्टर, डिप्टी-रजिस्ट्रार, डिप्टी-मिनिस्टर
- 3
- वाइस
- सहायक
- वाइसराय, वाइस-चांसलर, वाइस-पप्रेसीडेंट
- 4
- जनरल
- प्रधान
- जनरल मैनेजर, जनरल सेक्रेटरी
- 5
- चीफ
- प्रमुख
- चीफ-मिनिस्टर, चीफ-इंजीनियर, चीफ-सेक्रेटरी
- 6
- हेड
- मुख्य
- हेडमास्टर, हेड क्लर्क

प्रत्यय

- **प्रत्यय की परिभाषा - Definition**
- जो शब्दांश, शब्दों के अंत में जुड़कर अर्थ में परिवर्तन लाये, प्रत्यय कहलाते है।
- दूसरे अर्थ में - शब्द निर्माण के लिए शब्दों के अंत में जो शब्दांश जोड़े जाते हैं, वे प्रत्यय कहलाते हैं।
- प्रत्यय दो शब्दों से मिलकर बना होता है – प्रति + अय। प्रति का अर्थ होता है 'साथ में, पर बाद में' और अय का अर्थ होता है 'चलने वाला'। अत: प्रत्यय का अर्थ होता है, साथ में पर बाद में चलने वाला। प्रत्यय उपसर्गों की तरह अविकारी शब्दांश है, जो शब्दों के बाद जोड़े जाते है।
- प्रत्यय का अपना अर्थ नहीं होता और न ही इनका कोई स्वतंत्र अस्तित्व होता है। प्रत्यय अविकारी शब्दांश होते हैं जो शब्दों के बाद में जोड़े जाते है।
- **जैसे -**
  समाज + इक = सामाजिक
  सुगन्ध + इत = सुगन्धित
  भलना + अक्कड़ = भलक्कड़
  मीठा + आस = मिठास
  भला + आई = भलाई

संस्कृत प्रत्यय

- **'इक'प्रत्ययः**
- 'इक'प्रत्यय लगने पर शब्द के प्रारंभिक स्वर में इस प्रकार परिवर्तन होते है -
  अ = आ
  इ, ई, ए = ऐ
  उ, ऊ, ओ = औ
  ऋ = आर्
- मनस् + इक = मानसिक
  व्यवहार + इक = व्यावहारिक
  समूह + इक = सामूहिक
  नीति + इक = नैतिक
- भूगोल + इक = भौगोलिक
- **'एय' प्रत्यय**
- शब्द के अन्तिम वर्ण के स्वर को हटाकर उसमें 'एय'प्रत्यय जोड़ दिया जाता है | तथा 'इक'प्रत्यय की तरह शब्द के प्रथम स्वर में परिवर्तन कर देता है |
- **जैसे -**
- अग्नि + एय = आग्नेय
  गंगा + एय = गांगेय (भीष्म)
  राधा + एय = राधेय (कर्ण)

'ईय' प्रत्यय

- भारत + ईय = भारतीय
  मानव + ईय = मानवीय

विदेशी प्रत्यय

- ‘गर’ प्रत्यय
- जादू + गर = जादूगर
  बाज़ी + गर = बाज़ीगर

  ‘इश’ प्रत्यय
- फ़रमा + इश = फ़रमाइश
  पैदा + इश = पैदाइश
- ‘दान’ प्रत्यय
- रोशन + दान = रोशनदान
  इत्र + दान = इत्रदान

  (स्थान) ‘गाह’ प्रत्यय
- बंदर + गाह = बंदरगाह
  दर + गाह = दरगाह

  ‘गीर’ प्रत्यय
- राह + गीर = राहगीर
  उठाई + गीर = उठाईगीर

हिंदी प्रत्यय

- संज्ञा की रचना करने वाले कृत प्रत्यय -
- 'न' प्रत्यय
- बेल + न = बेलन
  चंद + न = चंदन

  'आ' प्रत्यय
- मेल + आ = मेला
  झूल + आ = झूला
- विशेषण की रचना करने वाले कृत प्रत्यय
-

  'आलु' प्रत्यय
- दया + आलु = दयालु
  श्रद्धा + आलु = श्रद्धालु

  'ऊ' प्रत्यय
- चालू + ऊ = चालू
  डाहिंदी प्रत्यय
- क + ऊ = डाकू
- अब हम हिंदी के प्रत्यय भेदों को विस्तारपूर्वक जानेगें-
  मानव + ता = मानवता
-

  अच्छा + आई = अच्छाई
  अपना + पन = अपनापन
  एक + ता = एकता
  ड़का + पन = लडकपन
  मम + ता = ममता
  अपना + पन = अपनत्व

- **जैसे -**
  अक = लेखक, नायक, गायक, पाठक
  अक्कड = भुलक्कड, घुमक्कड़, पियक्कड़
  आक = तैराक, लडाक
  आलू = झगड़ालू
  आकू = लड़ाकू, कृपालु, दयालु
-

  औना = बिछौना, खिलौना
  ना = सूँघना, पढना, खाना
  नी = सूँघनी, छलनी
  गा = गोना।
- आ = भटका, भूला, झूला
  ऊ = झाड़
  ई = रेती, फांसी, भारी, धुलाई
  न = बेलन, झाडन, बंधन

- अन = लेखन, पठन, गमन, मनन, मिलन
  ति = गति, रति, मति
  अ = जय, लेख, विचार, मार, लूट, तोल
  आवा = भुलावा, छलावा, दिखावा, बुलावा, चढाता = डूबता, बहता, चलता
  या = खोया, बोया
  आ = सुखा, भूला, बैठावाता = डूबता, बहता, चलता
  या = खोया, बोया
  आ = सुखा, भूला, बैठा
-

  ना = दौड़ना, सोना
  कर = जाकर, देखकरजुआ + आरी = जुआरी
  पान + वाला = पानवाला
  पालन + हार = पालनहार
  चित्र + कार = चित्रकार

हिन्दी के प्रत्यय

- बुलाव + आ = बुलावा
  ऊँचा + आई = ऊँचाई
  चौड़ा + आन = चौडान
  अपना + आयत = अपनायत
  छूट + आरा = छुटकारा
-
- नाना + हाल = ननिहाल
  ससुर + आल = ससुराल
  चाचा + ऐरा = चचेरा
  बहन + जा = भानजा
- पह + ला = पहला
  दूस + रा = दूसरा
  सात + वाँ = सातवाँ
  चौ + था = चौथा
- मीठ + आ = मीठा
- इतिहास + इक = ऐतिहासिक
  गुण + वान = गुणवान
  सेज + ईला = सेजीला
-
- जर्मन + ई = जर्मनी
  चाय + वाला = चायवाला
  जयपुर + इया = जयपुरिया
  कलके + तिया = कलकेतिया
-
- ढोल + क = ढोलक
  खाट + इया = खटिया
  बच्चा + वा = बचवा
  ठाकुर + आ = ठकुरा
- सुन + हरा = सुनहरा
  पीला + सा = पीला सा

पर्यायवाची शब्द

- 1-अग्नि=आग, ज्वाला, दहन, वैश्वानर, वायुसखा, अनल, पावक, वहनि
- 2-असुर-निशिचर, रजनीचर, दैत्य, तमचर, राक्षस, निशाचर, दानव, रात्रिचर।
- 3अलंकार-आभूषण, भूषण, विभूषण, गहना, जेवर।
- 4अहंका=-गर्व, अभिमान, घमंड, मान।
- 5-अंधकार=तम, तिमिर, तमिस्र, अँधेरा, तमस, अंधियारा।
- 6- अंग=अंश, अवयव, हिस्सा, भाग।
- 7-अनादर=अपमान, अवज्ञा, अवहेलना, तिरस्कार।
- 8-अंकुश=नियंत्रण, पाबंदी, रोक, दबाव।
- 9-अंतर=भिन्नता, असमानता, भेद, फर्क।
- 10-अंतरिक्ष=खगोल, नभमंडल, गगनमंडल, आकाशमंडल।
- 11-भाई-=तात, अनुज, अग्रज, भ्राता, भ्रातृ।
- 12-अंबर=आकाश, आसमान, गगन, फलक, नभ
- 13-अटल=अविचल, अडिग, स्थिर, अचल।
- 14-अनमोल=अमूल्य, बहुमूल्य, बेशकीमती।
- 15-अनाथ=तीम, लावारिस, बेसहारा, अनाश्रित।
- 16-अनुज=छोटा भाई, अनुभ्राता, कनिष्ठ।
- 17-अभद्र=असभ्य, अविनीत, अकुलीन, अशिष्ट।
- 18-आँख=लोचन, अक्षि, नैन, नयन, नेत्र, चक्षु, दृष्टि
- 19-आईना=दर्पण, आरसी, शीशा।
- 20-आक्रोश=क्रोध, रोष, कोप, खीझ।
- 21-आचार्य=शिक्षक, अध्यापक, प्राध्यापक, गुरु।
- 22-आरंभ=श्रीगणेश, शुभारंभ, प्रारंभ, शुरुआत23
- 23-इंदु=चाँद, चंद्रमा, चंदा, शशि, मयंक, महताब।
- 24-ईर्ष्या=विद्वेष, जलन, कुढ़न, ढाह।
- 25-उपवन=बाग़, बगीचा, उद्यान, वाटिका, गुलशन।
- 26-उषा=सुबह, भोर, ब्रह्ममुहूर्त।
- 27-ऋषि=साधु, महात्मा, मुनि, योगी, तपस्वी।
- 28-एहसान=कृपा, अनुग्रह, उपकार।
- 29-ओंठ=ओष्ठ, अधर, लब, होठ।
- 30-ऐश्वर्य=समृद्धि, विभूति।
- 31-औरत=स्त्री, जोरू, महिला, नारी, वनिता, घरवाली।
- 32-औषधालय=चिकित्सालय, दवाखाना, अस्पताल।

पर्यायवाची शब्द

- 33-कमल
- अरविन्द, पुष्कर, पंकज, नीरज, सरोज, जलज, जलजात, पुण्डरीक।
- 34-कपड़ा
- वस्त्र, चीर, वसन, पट, अम्बर, परिधान।
- 35-किसान
- कृषक, भूमिपुत्र, हलधर, खेतिहर, अन्नदाता।
- 36-कान
- कर्ण, श्रुति, श्रुतिपटल, श्रवण।
- 37
- कमजोर
- निर्बल, बलहीन, दुर्बल, मरियल, शक्तिहीन।
- 38-कुसुम
- पुष्प, फूल, प्रसून, पुहुप।39
- खग
- पक्षी, द्विज, विहग, नभचर, अण्डज, पखेरू।
- 40-गृह
- घर, सदन, भवन, धाम, निकेतन, निवास, आवास, मं
- 41-गिरि
- पहाड़, मेरु, शैल, महीधर, धराधर, भूधर।
- 42-गोद
- अंक, क्रोड़, गोदी।
- 43-चावल
- तंदुल, धान, भात।
- 44-चूहा
- मूसा, मूषक, मुसटा, उंदुर।
- 45-जल
- मेघपुष्प, अमृत, वारि, नीर, पानी, जीवन, पेय
- 46-जगत
- -संसार, विश्व, जग, भव, दुनिया, लोक, भुवन।
- 47-जमीन
- धरती, भू, भूमि, पृथ्वी, धरा, वसुंधरा।
- 48-जलाशय
- तालाब, ताल, पोखर, सरोवर।
- 49-तरुवर
- वृक्ष, पेड़, द्रुम, तरु, पादप।
- 50-मछली
- मीन, मत्स्य, झख, जलजीवन, शफरी

विलोम शब्द

- 1अच्छा=बुरा
- 2-अंकुश=निरंकुश
- 3-अक्रुर=क्रुर
- 4-अनुज=अग्रज
- 5-अग्रिम=अन्तिम
- 6-अंत=अनंत
- 7-अति=अल्प
- 8-अतिवृष्टि=अनावृष्टि
- 9-अनुकूल=प्रतिकूल
- 10-अनुरक्ति=विरक्ति
- 11-अनित्य=नित्य
- 12-अनुलोम=विलोम
- 13-अमृत, अमि, (अमिय)=विष, जहर
- 14-अर्पण=ग्रहण
- 15-अपेक्षा=उपेक्षा
- 16-अर्वाचीन=प्राचीन
- 17-अपकार=उपकार
- 18-अल्प=अधिक
- 19-अधम=उत्तम
- 20-अनाथ=सनाथ
- 21-आदर=अनादर
- 22-अंतर=बाह्य
- 23-अल्पकालीन=दीर्घकालीन
- 24-अपेक्षित=अनपेक्षित
- 25-अंगीकार, स्वीकार=अस्वीकार
- 26-अवनि, पृथ्वी, भू,=अम्बर, आकाश, नभ
- 27-अल्पायु=दीर्घायु
- 28-अमर=मर्त्य
- 29-अतल=वितल
- 30-अमावस्या=पूर्णिमा
- 31-असली=नकली
- 32-अनुपस्थिति=उपस्थिति
- 33-अस्त=उदय
- 34-अनैतिहासिक=ऐतिहासिक
- 35-आरोह=अवरोह

- इच्छा=अनिच्छा
- इहलोक=परलोक
- ईश्वर=अनीश्वर
- ईर्ष्या=प्रेम
- इष्ट=अनिष्ट
- इधर=उधर
- इकट्ठा=अलग
- इति=अथ
- इंसाफ=गैर इंसाफ
- इकहरा=दुहरा
- ईद=मुहर्रम
- ईमानदार=बेईमान
- इसका=उसका
- ईषत=अलम
- इच्छित=अनिच्छित
- ईश्वरवाद=अनीश्वरवाद
- उत्कर्ष=अपकर्ष
-

- उत्थान=पतन
- उत्तीर्ण=अनुत्तीर्ण
- उपकारक=अपकारक
- उतार=चढ़ाव
- उदीची=प्रतीचीउपजाऊ
- बंजर=उपार्जित
- स्वंयप्राप्त=उत्पतन
- निपतन, अवतरण
- उदात्त=अनुदात्त
  उद्यमी=आलसी
- उर्वर=ऊसर
- उधार=नगद
- उत्कृष्ट=निकृष्ट
- उचित=अनुचित
- उषा=संध्या
- उग्र=सौम्य
- उदार=अनुदार
- उन्नति=अवनति
- उपयुक्त=अनुपयुक्त
- उपाय=निरुपाय
- उत्तरायण=दक्षिणायन
- उपचार=अपचार
-

- कृतज्ञ=कृतघ्न
- खेद=प्रसन्नता
- क्रय=विक्रय
- कनिष्ठ=ज्येष्ठ, वरिष्ठ
- कृष्ण=शुक्ल
- कंजूस=दानी
- कंटक=पुष्प
- कंठस्थ=विस्मरण
- कंपन=स्थिर
- कटुता=मधुरता
- खरीद=बिक्री
- खिलना=मुरझाना
- खंडन=मंडन
- खरा=खोटा
- खुशी=गम
- खुला=बंद
- खुशबू=बदबू
- खुशकिस्मत=बदकिस्मत
- कन्या=वर
- घाटी=पर्वत
- घायल=दुरुस्त
- घमंड=विनय
- घोषित=अघोषि
- छूत=अछूत
- गमन=आगमन
- गंभीर=वाचाल
- गीला=सूखा
- गहरा=छिछला
- गणतंत्र=राजतंत्र
- गुण=दोष
- गद्य=पद्य
- गर्मी=सर्दी
- घात=प्रतिघात
- घन=तरल
- गाँव=शहर
- गुण=अवगुण
- गंदा=साफ
- गलत=सही
- गुप्त=प्रकट
- गुरु=लघु
- गहरा=उथल
- गरीब=अमीर
- घाटा=फायदा
- गृहस्थ=सन्यासी
- गाढ़ा=पतला, तनु
- गौण=प्रमुख, प्रधान
- घटाव=जोड़
- घटिया=बढ़िया

- चालाक=बेवकूफ=
- चुस्त=ढीला
- चाँदनी=अँधेरा
- चमकदार=चमकहीन
- चिंतित=निश्चिंत
- चपल=गंभीर
- छाया=प्रकाश, रोशनी
- छेद्य=अछेद्य
- चौड़ी=संकरी, तंग
- छोटा=बड़ा
- जागरूक=उदासीन
- जन्म=मृत्यु
- जटिल=सरल
- जल=स्थल
- जातीय=विजातीय
- ज्वार=भाटा
- जाग्रत=सुषुप्त
- जीत=हार
- जाति=कुजाति
- झूठ=सच
- झोपड़ी=महल
- जंगली=पालतू
- जय=पराजय
- पुष्ट=अपुष्ट
- निडर=डरपोक
- ठंडा=गर्म
- ठोस=तरल
- डरपोक=निडर, साहसी
- ढ़लना=चढ़ना
- तामसिक=सात्विक
- तरुण=वृद्ध
- तारीफ=शिकायत
- तीक्ष्ण=कुंठित
- तटस्थ=पक्षपाती
- दिन=रात
- दाता=याचक
- दुर्लभ=सुलभ
- दुत्कार=स्वागत
- दयालु=निर्दयी
- धीर=अधीर
- देव=दानव
- दीर्घकाय
- लघुकाय
- देर=सवेर, जल्दी
- दुराचारी=सदाचारी
- दंड=पुरस्कार
- प्रत्यक्ष=परोक्ष
- पूर्ववर्ती=परवर्ती
- प्रवृति=निवृति
- पठित=अपठित
- प्रश्न=उत्तर
- पक्ष=विपक्ष

धन्यवाद